The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 4: The Praise of Devi by Indra and Other Gods

अध्याय ४: इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

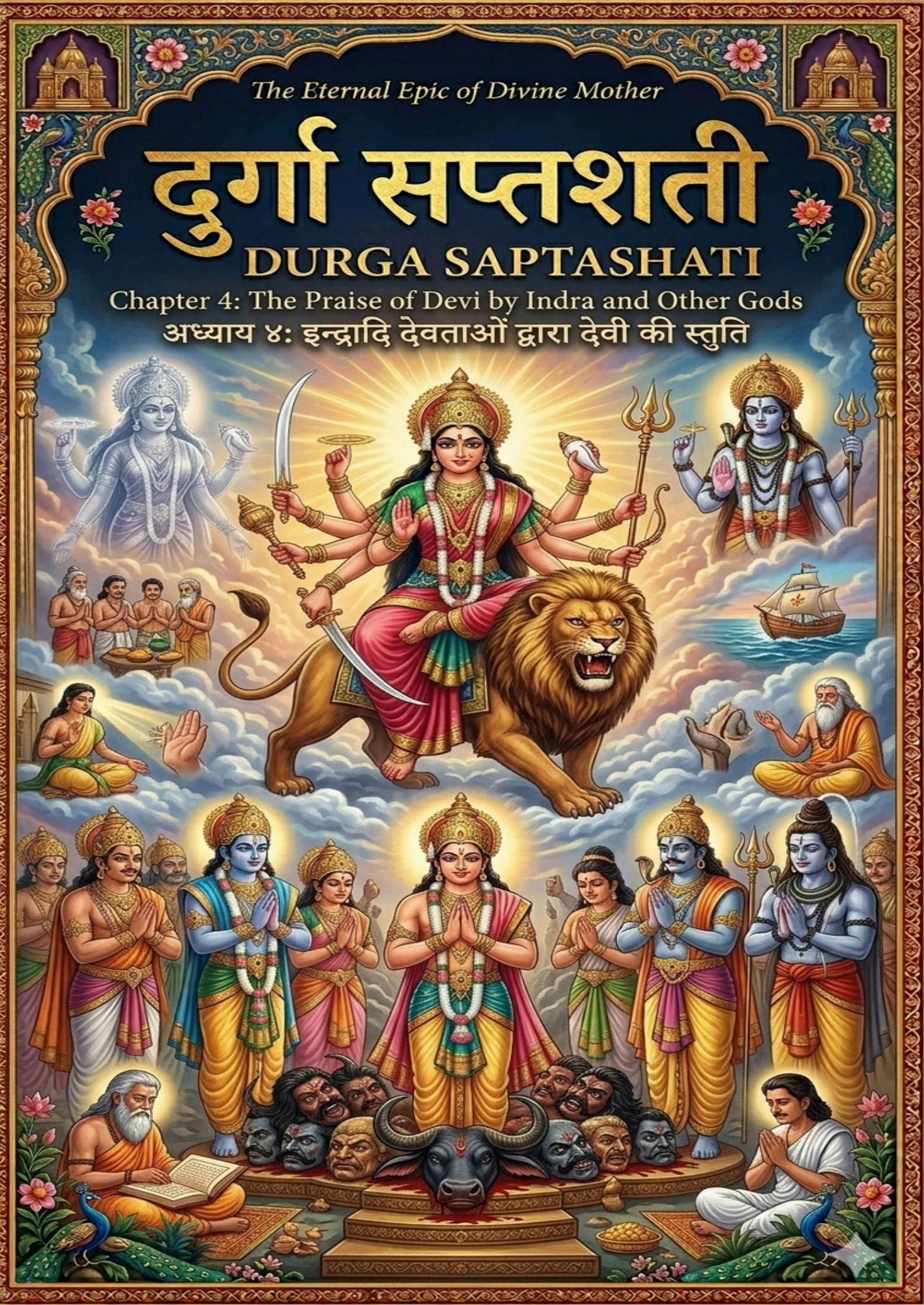

Durga Saptashati

|| 'चतुर्थ अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

यह पाठ दुर्गा सप्तशती के चौथे अध्याय का सारांश है, जिसका शीर्षक है **"इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति"**।

- **ध्यान:** अध्याय की शुरुआत 'जया' नामवाली दुर्गादेवी के ध्यान से होती है, जिनका स्वरूप श्याम वर्ण का है, जो शंख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करती हैं, सिंह पर विराजमान हैं और अपने तेज से तीनों लोकों को व्याप्त कर रही हैं।
- **स्तुति का कारण:** अत्यन्त पराक्रमी महिषासुर और उसकी दैत्य-सेना के देवी के हाथों मारे जाने पर, इन्द्र आदि देवताओं ने अत्यंत हर्षित होकर, गर्दन झुकाकर, भगवती दुर्गा का उत्तम वचनों द्वारा स्तवन (स्तुति) करना आरंभ किया।
- **देवताओं की स्तुति:**
    - देवता देवी को समस्त देवताओं की शक्ति का समुदाय और सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त करने वाली बताते हैं।
    - वे देवी को क्रमशः पुण्यात्माओं के घरों में लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तःकरण में बुद्धिरूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से, और कुलीन मनुष्य में लज्जारूप से निवास करने वाली बताते हैं।
    - देवी को जगत् की उत्पत्ति का कारण, तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) से युक्त, सबका आश्रय, अव्याकृता परा प्रकृति, 'स्वाहा' (देवताओं को तृप्ति देने वाली), 'स्वधा' (पितरों को तृप्ति देने वाली) और मोक्ष की साधन 'परा विद्या' बताया गया है।
    - उन्हें शब्दस्वरूपा, तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद) का आधार, वार्ता (खेती/आजीविका), मेधाशक्ति (बुद्धिमत्ता), दुर्गारूपिणी (भवसागर से पार उतारने वाली नौका), लक्ष्मी और गौरी भी कहा गया है।
    - देवता देवी के अचिन्त्य रूप, भारी पराक्रम और अद्भुत चरित्रों का वर्णन करने में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं।
    - वे आश्चर्य व्यक्त करते हैं कि महिषासुर ने देवी के सुंदर, मंद मुस्कान वाले मुख पर प्रहार कैसे किया, और क्रोधित विकराल मुख देखकर भी वह तुरंत प्राण कैसे नहीं त्याग सका।
    - देवता कहते हैं कि देवी के प्रसन्न होने पर जगत् का अभ्युदय होता है, और क्रोधित होने पर कुलों का सर्वनाश होता है, जिसका अनुभव महिषासुर की सेना के विनाश से हुआ।
    - वे देवी से स्मरण करने पर भय हरने और स्वस्थ पुरुषों को परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।
    - देवता देवी की दयालुता को मानते हैं, यह कहकर कि वह शत्रुओं को मारकर भी उन्हें शस्त्रों से पवित्र करके स्वर्गलोक भेजती हैं।
    - वे देवी के शील (दुराचारियों को दूर करने वाला), अनुपम रूप, और देवताओं को भी परास्त करने वाले दैत्यों का नाश करने वाले बल की प्रशंसा करते हैं।
- **रक्षा की प्रार्थना:** देवता देवी से शूल, खड्ग, घण्टा, धनुष की टंकार और त्रिशूल को घुमाकर पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशाओं तथा तीनों लोकों में रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं।
- **देवी का वरदान:** देवताओं द्वारा स्तुति और पूजन किए जाने पर, देवी प्रसन्न होकर वर माँगने को कहती हैं।
- **देवताओं का वरदान माँगना:** देवता कहते हैं कि महिषासुर के मारे जाने से उनकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो गईं। फिर भी, वे यह वर माँगते हैं कि जब-जब वे देवी का स्मरण करें, तब-तब वह दर्शन देकर उनके संकट दूर करें, और जो मनुष्य इन स्तोत्रों द्वारा उनकी स्तुति करे, उसे वित्त, समृद्धि, वैभव और धन-संपत्ति दें।
- **देवी का अंतर्धान:** देवी 'तथास्तु' कहकर वहीं अंतर्धान हो जाती हैं।
- **ऋषि का कथन:** ऋषि (मार्कण्डेय) राजा को बताते हैं कि इस प्रकार देवी देवताओं के शरीर से प्रकट हुई थीं। अब वे दुष्ट दैत्यों शुम्भ-निशुम्भ का वध करने के लिए गौरीदेवी के शरीर से कैसे प्रकट होंगी, वह कथा आगे सुनाएँगे।
- **अध्याय की समाप्ति:** अध्याय का समापन **'शक्रादिस्तुति'** नामक चौथा अध्याय पूरा हुआ घोषणा के साथ होता है।

Durga Saptashati
|| 'चतुर्थ अध्याय' ||

Chapter 4 :

इन्द्रादि देवताओं द्वारा देवी की स्तुति

॥ ध्यान ॥

सिद्धि की इच्छा रखनेवाले पुरुष जिनकी सेवा करते हैं तथा देवता जिन्हें सब ओर से घेरे रहते हैं, उन 'जया' नामवाली दुर्गादेवी का ध्यान करे। उनके श्रीअङ्गों की आभा काले मेघ के समान श्याम है। वे अपने कटाक्षों से शत्रुसमूह को भय प्रदान करती हैं। उनके मस्तक पर आबद्ध चन्द्रमा की रेखा शोभा पाती है। वे अपने हाथों में शङ्ख, चक्र, कृपाण और त्रिशूल धारण करती हैं। उनके तीन नेत्र हैं। वे सिंह के कंधेपर चढ़ी हुई हैं और अपने तेज से तीनों लोकोंको परिपूर्ण कर रही हैं।

ऋषि कहते हैं - अत्यन्त पराक्रमी दुरात्मा महिषासुर तथा उसकी दैत्य-सेनाके देवीके हाथसे मारे जानेपर इन्द्र आदि देवता प्रणामके लिये गर्दन तथा कंधे झुकाकर उन भगवती दुर्गा का उत्तम वचनोंद्वारा स्तवन करने लगे। उस समय उनके सुन्दर अङ्गोंमें अत्यन्त हर्षके कारण रोमाञ्च हो आया था॥

देवता बोले - 'सम्पूर्ण देवताओंकी शक्तिका समुदाय ही जिनका स्वरूप हैं तथा जिन देवीने अपनी शक्तिसे सम्पूर्ण जगत्को व्याप्त कर रखा है, समस्त देवताओं और महर्षियोंकी पूजनीया उन जगदम्बाको हम भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं। वे हमलोगोंका कल्याण करें॥

जिनके अनुपम प्रभाव और बलका वर्णन करनेमें भगवान् शेषनाग, ब्रह्माजी तथा महादेवजी भी समर्थ नहीं हैं, वे भगवती चण्डिका सम्पूर्ण जगत्का पालन एवं अशुभ भयका नाश करनेका विचार करें॥जो पुण्यात्माओंके घरोंमें स्वयं ही लक्ष्मीरूपसे, पापियोंके यहाँ दरिद्रतारूपसे, शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषोंके हृदयमें बुद्धिरूपसे, सत्पुरुषों में श्रद्धारूपसे तथा कुलीन मनुष्यमें लज्जारूपसे निवास करती हैं, उन आप भगवती दुर्गाको हम नमस्कार करते हैं। देवि! आप सम्पूर्ण विश्वका पालन कीजिये॥ देवि!

आपके इस अचिन्त्य रूपका, असुरोंका नाश करनेवाले भारी पराक्रमका तथा समस्त देवताओं और दैत्योंके समक्ष युद्धमें प्रकट किये हुए आपके अद्भुत चरित्रोंका हम किस प्रकार वर्णन करें॥

आप सम्पूर्ण जगत्की उत्पत्तिमें कारण हैं। आपमें सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण - ये तीनों गुण मौजूद हैं; तो भी दोषों के साथ आपका संसर्ग नहीं जान पड़ता। भगवान् विष्णु और महादेवजी आदि देवता भी आपका पार नहीं पाते। आप ही सबका आश्रय हैं। यह समस्त जगत् आपका अंशभूत है; क्योंकि आप सबकी आदिभूत अव्याकृता परा प्रकृति हैं॥ देवि! सम्पूर्ण यज्ञोंमें जिसके उच्चारणसे सब देवता तृप्ति लाभ करते हैं, वह स्वाहा आप ही हैं। इसके अतिरिक्त आप पितरों की भी तृप्ति का कारण हैं, अतएव सब लोग आपको स्वधा भी कहते हैं॥

देवि! जो मोक्षकी प्राप्तिका साधन है, अचिन्त्य महाव्रतस्वरूपा है, समस्त दोषोंसे रहित, जितेन्द्रिय, तत्त्वको ही सार वस्तु माननेवाले तथा मोक्षकी अभिलाषा रखनेवाले मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं वह भगवती परा विद्या आप ही हैं॥

आप शब्दस्वरूपा हैं, अत्यन्त निर्मल ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा उद्गीथके मनोहर पदोंके पाठसे युक्त सामवेदका भी आधार आप ही हैं। आप देवी, त्रयी (तीनों वेद) और भगवती (छहों ऐश्वर्यों से युक्त) हैं। इस विश्वकी उत्पत्ति एवं पालनके लिये आप ही वार्ता (खेती एवं आजीविका) - के रूपमें प्रकट हुई हैं। आप सम्पूर्ण जगत्की घोर पीड़ाका नाश करनेवाली हैं॥ देवि! जिससे समस्त शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह मेधाशक्ति आप ही हैं। दुर्गम भवसागरसे पार उतारनेवाली नौकारूप दुर्गादेवी भी आप ही हैं। आपकी कहीं भी आसक्ति नहीं है। कैटभ के शत्रु भगवान् विष्णु के वक्षःस्थलमें एकमात्र निवास करनेवाली भगवती लक्ष्मी तथा भगवान् चन्द्रशेखर द्वारा सम्मानित गौरी देवी भी आप ही हैं॥

आपका मुख मन्द मुसकानसे सुशोभित, निर्मल, पूर्ण चन्द्रमाके बिम्बका अनुकरण करनेवाला और उत्तम सुवर्णकी मनोहर कान्तिसे कमनीय है; तो भी उसे देखकर महिषासुरको क्रोध हुआ और सहसा उसने उसपर प्रहार कर दिया, यह बड़े आश्चर्यकी बात है॥

देवि! वही मुख जब क्रोधसे युक्त होनेपर उदयकालके चन्द्रमाकी भाँति लाल और तनी हुई भौंहोंके कारण विकराल हो उठा, तब उसे देखकर जो महिषासुर प्राण तुरंत नहीं निकल गये, यह उससे भी बढ़कर आश्चर्यकी बात है; क्योंकि क्रोधमें भरे हुए यमराजको

देखकर भला कौन जीवित रह सकता है?॥

देवि! आप प्रसन्न हों। परमात्मस्वरूपा आपके प्रसन्न होनेपर जगत्का अभ्युदय होता है और क्रोधमें भर जानेपर आप तत्काल ही कितने कुलोंका सर्वनाश कर डालती हैं, यह बात अभी अनुभवमें आयी है; क्योंकि महिषासुरकी यह विशाल सेना क्षणभरमें आपके कोपसे नष्ट हो गयी है॥

सदा अभ्युदय प्रदान करनेवाली आप जिनपर प्रसन्न रहती हैं, वे ही देशमें सम्मानित हैं, उन्हींको धन और यशकी प्राप्ति होती है, उन्हींका धर्म कभी शिथिल नहीं होता तथा वे ही अपने हृष्ट-पुष्ट स्त्री, पुत्र और भृत्योंके साथ धन्य माने जाते हैं॥

देवि! आपकी ही कृपासे पुण्यात्मा पुरुष प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धापूर्वक सदा सब प्रकारके धर्मानुकूल कर्म करता है और उसके प्रभावसे स्वर्गलोकमें जाता है; इसलिये आप तीनों लोकोंमें निश्चय ही मनोवाञ्छित फल देनेवाली हैं॥

माँ दुर्गे! आप स्मरण करनेपर सब प्राणियोंका भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषोंद्वारा चिन्तन करनेपर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि! आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करनेके लिये सदा ही दयार्द्र रहता हो॥

देवि! इन राक्षसोंके मारनेसे संसारको सुख मिले तथा ये राक्षस चिरकालतक नरकमें रहनेके लिये भले ही पाप करते रहे हों, इस समय संग्राममें मृत्युको प्राप्त होकर स्वर्गलोकमें जायँ - निश्चय ही यही सोचकर आप शत्रुओंका वध करती हैं॥

आप शत्रुओंपर शस्त्रोंका प्रहार क्यों करती हैं? समस्त असुरोंको दृष्टिपातमात्रसे ही भस्म क्यों नहीं कर देतीं? इसमें एक रहस्य है। ये शत्रु भी हमारे शस्त्रोंसे पवित्र होकर उत्तम लोकोंमें जायँ - इस प्रकार उनके प्रति भी आपका विचार अत्यन्त उत्तम रहता है॥

खड्गके तेजःपुञ्जकी भयङ्कर दीप्तिसे तथा आपके त्रिशूलके अग्रभागकी घनीभूत प्रभासे चौंधियाकर जो असुरोंकी आँखें फूट नहीं गयीं, उसमें कारण यही था कि वे मनोहर रश्मियोंसे युक्त चन्द्रमाके समान आनन्द प्रदान करनेवाले आपके इस सुन्दर मुखका दर्शन करते थे॥

देवि! आपका शील दुराचारियोंके बुरे बर्तावको दूर करनेवाला है। साथ ही यह रूप ऐसा है, जो कभी चिन्तनमें भी नहीं आ सकता और जिसकी कभी दूसरोंसे तुलना भी नहीं हो

सकती; तथा आपका बल और पराक्रम तो उन दैत्योंका भी नाश करनेवाला है, जो कभी देवताओंके पराक्रमको भी नष्ट कर चुके थे। इस प्रकार आपने शत्रुओं पर भी अपनी दया ही प्रकट की है॥

वरदायिनी देवि! आपके इस पराक्रमकी किसके साथ तुलना हो सकती है तथा शत्रुओंको भय देने वाला एवं अत्यन्त मनोहर ऐसा रूप भी आपके सिवा और कहाँ है? हृदयमें कृपा और युद्ध में निष्ठुरता - ये दोनों बातें तीनों लोकों के भीतर केवल आप में ही देखी गयी हैं॥

मातः! आपने शत्रुओंका नाश करके इस समस्त त्रिलोकीकी रक्षा की है। उन शत्रुओंको भी युद्धभूमिमें मारकर स्वर्गलोकमें पहुँचाया है तथा उन्मत्त दैत्योंसे प्राप्त होनेवाले हमलोगोंके भयको भी दूर कर दिया है, आपको हमारा नमस्कार है॥

देवि! आप शूलसे हमारी रक्षा करें। अम्बिके! आप खड्ग से भी हमारी रक्षा करें तथा घण्टा की ध्वनि और धनुष की टंकार से भी हम लोगों की रक्षा करें॥

चण्डिके! पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशामें आप हमारी रक्षा करें तथा ईश्वरि! अपने त्रिशूलको घुमाकर आप उत्तर दिशामें भी हमारी रक्षा करें॥

तीनों लोकोंमें आपके जो परम सुन्दर एवं अत्यन्त भयङ्कर रूप विचरते रहते हैं, उनके द्वारा भी आप हमारी तथा इस भूलोककी रक्षा करें॥

अम्बिके! आपके कर-पल्लवोंमें शोभा पानेवाले खड्ग, शूल और गदा आदि जो-जो अस्त्र हों, उन सबके द्वारा आप सब ओरसे हमलोगोंकी रक्षा करें॥

ऋषि कहते हैं -॥ इस प्रकार जब देवताओंने जगन्माता दुर्गाकी स्तुति की और नन्दनवनके दिव्य पुष्पों एवं गन्ध-चन्दन आदिके द्वारा उनका पूजन किया, फिर सबने मिलकर जब भक्तिपूर्वक दिव्य धूपोंकी सुगन्ध निवेदन की, तब देवीने प्रसन्नवदन होकर प्रणाम करते हुए सब देवताओंसे कहा -॥

देवी बोलीं -॥ देवताओ! तुम सब लोग मुझसे जिस वस्तुकी अभिलाषा रखते हो, उसे माँगो॥

देवता बोले -॥ भगवतीने हमारी सब इच्छा पूर्ण कर दी, अब कुछ भी बाकी नहीं है॥ क्योंकि हमारा यह शत्रु महिषासुर मारा गया। महेश्वरि! इतनेपर भी यदि आप हमें और वर देना चाहती हैं॥

तो हम जब-जब आपका स्मरण करें, तब-तब आप दर्शन देकर हमलोगोंके महान् संकट दूर कर दिया करें तथा प्रसन्नमुखी अम्बिके! जो मनुष्य इन स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करे, उसे वित्त, समृद्धि और वैभव देनेके साथ ही उसकी धन और स्त्री आदि सम्पत्तिको भी बढ़ानेके लिये आप सदा हमपर प्रसन्न रहें॥

ऋषि कहते हैं -॥ राजन्! देवताओंने जब अपने तथा जगत् के कल्याणके लिये भद्रकाली देवीको इस प्रकार प्रसन्न किया, तब वे 'तथास्तु' कहकर वहीं अन्तर्धान हो गयीं॥ भूपाल! इस प्रकार पूर्वकालमें तीनों लोकोंका हित चाहनेवाली देवी जिस प्रकार देवताओंके शरीरोंसे प्रकट हुई थीं, वह सब कथा मैंने कह सुनायी॥

अब पुनः देवताओंका उपकार करनेवाली वे देवी दुष्ट दैत्यों तथा शुम्भ-निशुम्भका वध करने एवं सब लोकों की रक्षा करनेके लिये गौरीदेवीके शरीरसे जिस प्रकार प्रकट हुई थीं, वह सब प्रसङ्ग मेरे मुँहसे सुनो। मैं उसका तुमसे यथावत् वर्णन करता हूँ॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत

देवी माहात्म्य में 'शक्रादिस्तुति' नामक चौथा अध्याय पूरा हुआ ॥

Durga Saptashati

|| 'Chapter Four' ||

Chapter 4:

Praise of the Devi by Indra and other Deities

॥ **Dhyana (Meditation)** ॥

One should meditate on the Devi Durga named 'Jaya', whom men desiring siddhi (spiritual power/perfection) worship, and who is surrounded by the Devas (Gods) on all sides. The radiance of her limbs is dark, like a black cloud. She instills fear in the multitude of enemies with her sidelong glances. The line of the moon bound on her forehead shines. She holds a conch, discus, sword, and trident in her hands. She has three eyes. She is mounted on the shoulder of a lion and pervades the three worlds with her brilliance.

The Rishi said: When the extremely powerful, wicked-souled Mahishasura and his demon army were slain by the Devi, Indra and the other Devas, bending their necks and shoulders in salutation, began to praise that Bhagavati Durga with excellent words. At that time, their beautiful bodies were covered with goosebumps due to extreme joy.

The Devas said: 'We devoutly bow to that Jagadamba (Mother of the Universe), whose form is the aggregate of the powers of all the Devas, and who has pervaded the entire world with her power, and who is worshipped by all the Devas and Mahārishis (great sages). May she bestow welfare upon us.

May the Bhagavati Chandika, whose incomparable influence and power Lord Shesha, Brahmaji, and Mahadevji (Lord Shiva) are also

unable to describe, contemplate the protection of the entire world and the destruction of inauspicious fear. You, the Bhagavati Durga, who reside in the homes of the virtuous as Lakshmi herself, as poverty among the sinners, as intellect in the hearts of men with pure inner consciousness, as faith among the good people, and as modesty in a well-born person, we bow to you. O Devi! Please protect the entire universe. O Devi! How can we describe this inconceivable form of yours, your immense prowess that destroys the Asuras, and your wonderful deeds manifested in battle before all the Devas and Daityas (demons)?

You are the cause of the origin of the entire world. You possess the three Gunas (qualities) - Sattva (goodness), Rajas (passion), and Tamas (inertia) - yet your association with flaws is not apparent. Even Devas like Lord Vishnu and Mahadevji cannot comprehend your limits. You are the support of all. This entire universe is a part of you, because you are the primordial, unmanifested supreme Prakriti (Nature). O Devi! You are Swaha, through the utterance of which in all yajnas (sacrifices), all Devas gain satisfaction. In addition to this, you are also the cause of the satisfaction of the Pitris (ancestors); therefore, everyone also calls you Swadha.

O Devi! You are the supreme Vidya (knowledge) that is the means to attain moksha (liberation), is of the nature of an inconceivable great vow, is free from all flaws, and which is practiced by Munis (ascetics) who are self-controlled, who consider only the truth to be the essential substance, and who long for moksha.

You are the very nature of sound; you are the basis of the Rigveda, the Yajurveda, and also the Samaveda, which is filled with the melodious verses of the Udgītha (a part of the Samaveda) and is extremely pure. You are the Devi, Trayi (the three Vedas), and Bhagavati (endowed with the six opulences). For the creation and sustenance of this universe, you are manifested as Vārta (agriculture and livelihood). You are the destroyer of the terrible agony of the entire world. O Devi! You are the power of intelligence

(Medha Shakti) from which the essence of all scriptures is known. You are also the Durga Devi in the form of a boat that ferries across the difficult ocean of existence. You have no attachment anywhere. You are the Bhagavati Lakshmi, who resides solely on the chest of Lord Vishnu, the enemy of Kaitabha, and you are also the Gauri Devi, revered by Lord Chandrashekhara (Lord Shiva).

Your face, adorned with a gentle smile, pure, imitating the orb of the full moon, and lovely with the beautiful radiance of excellent gold—yet, upon seeing it, Mahishasura was enraged and suddenly struck it. This is a matter of great astonishment.

O Devi! When that very face, filled with anger, became red like the moon at sunrise and fearsome due to the drawn eyebrows, that Mahishasura's life did not instantly depart upon seeing it, this is even more astonishing; for who can remain alive after seeing the enraged Yama (God of Death)?

O Devi! Be pleased. When you, the Supreme Self, are pleased, the world prospers, and when you are filled with wrath, you instantly destroy many lineages. This fact has just been experienced, because this vast army of Mahishasura has been destroyed in a moment by your wrath.

Those upon whom you, the ever-bestower of prosperity, are gracious, are honored in the country, they attain wealth and fame, their Dharma (righteousness) never slackens, and they are considered blessed along with their robust wife, sons, and servants.

O Devi! By your grace, the virtuous man performs all kinds of righteous actions with extreme devotion every day, and by its influence, he goes to the heavenly realm; therefore, you are verily the granter of desired fruits in the three worlds.

O Mother Durga! Upon being remembered, you remove the fear of all creatures, and upon being contemplated by healthy (unafflicted) persons, you bestow upon them supremely auspicious intellect. O Devi, who removes sorrow, poverty, and fear! Who else is there

besides you, whose heart is always melted with compassion for the welfare of all?

O Devi! May the world attain happiness by the slaying of these demons, and even though these demons may have committed sins to dwell in Naraka (hell) for a long time, may they attain Svargaloka (heaven) by meeting death in this battle—verily, thinking this, you slay your enemies.

Why do you strike the enemies with weapons? Why don't you burn all the Asuras merely by a glance? There is a secret in this. May these enemies also become purified by our weapons and go to the excellent realms—in this way, your consideration for them is also extremely noble.

That the eyes of the Asuras were not blinded by the dreadful brilliance of the flash of the sword and the concentrated light of the tip of your trident, the reason for that was that they were beholding this beautiful face of yours, which grants bliss like the moon with its delightful rays.

O Devi! Your character is one that removes the bad conduct of the wicked. Moreover, your form is such that it can never be conceived even in thought and can never be compared to others. And your strength and prowess are such that they destroy even those Daityas who had previously destroyed the prowess of the Devas. Thus, you have shown only your compassion even to your enemies.

O Devi, the bestower of boons! With whom can this prowess of yours be compared? And where else is there a form so fearsome to enemies and yet so exceedingly beautiful, except in you? Compassion in the heart and ruthlessness in battle—these two things have been seen only in you within the three worlds.

O Mother! You have protected this entire triple world by destroying the enemies. You have also sent those enemies to Svargaloka by slaying them on the battlefield, and you have also removed the fear we received from the intoxicated Daityas. Salutations to you.

O Devi! Protect us with your spear. O Ambikā! Protect us also with your sword, and protect us with the sound of your bell and the twang of your bow.

O Chandikā! Protect us in the East, West, and South directions, and O Īśvarī! Protect us also in the North direction by whirling your trident.

O Ambikā! Protect us and this Bhūloka (Earth) with your supremely beautiful and extremely terrifying forms that wander in the three worlds.

O Ambikā! Whatever weapons, such as the sword, spear, and mace, adorn your lotus-like hands, protect us from all sides with all of them.

The Rishi said: Thus, when the Devas praised the Mother of the Universe, Durga, and worshiped her with the divine flowers of the Nandana garden and with fragrances, sandalwood, etc., and then all together devoutly offered the fragrance of divine incense, the Devi, with a pleased countenance, spoke to all the Devas, who were bowing:

The Devi said: O Devas! Ask from me whatever object you all desire.

The Devas said: The Bhagavati has fulfilled all our desires; nothing remains now, because this enemy of ours, Mahishasura, has been slain. O Maheśvarī! Even then, if you wish to grant us another boon:

Then, whenever we remember you, may you appear and remove our great calamities, and O pleased-faced Ambikā! May you always be gracious to us by granting wealth, prosperity, and opulence, and by increasing the property of those who praise you with these stotras (hymns), such as their wealth and wives.

The Rishi said: O King! When the Devas thus pleased the Devi Bhadrakali for their own welfare and the welfare of the world, she said, 'So be it,' and disappeared right there. O Ruler of the Earth!

Thus, the entire story of how the Devi, who desired the good of the three worlds, manifested from the bodies of the Devas in ancient times, has been narrated by me.

Now, listen to me recount the entire episode of how the Devi, who again benefited the Devas by slaying the wicked Daityas, Shumbha and Nishumbha, and protecting all the worlds, manifested from the body of the Devi Gauri. I shall describe it to you exactly as it happened.

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the narrative of the Sāvarṇika Manvantara, the fourth chapter named 'Śakrādistuti' (Praise by Indra and others) in the Devi Mahatmya is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator

- Numerology Kundali Matching Tool